Date : 27 मार्च 2023

LVM3-M3/ One web India 2 मिशन

संदर्भ- हाल ही में इसरो द्वारा वनवेब कंपनी के 36 उपग्रहों को प्रक्षेपित किया गया। इसरो के अनुसार यह भारत का LVM3-M3/One web India 2 मिशन था। इसके साथ ही LVM 3 का छठा प्रक्षेपण था।

LVM3-M3/ One web India 2 मिशन

- यह मिशन भारत और ब्रिटेन के मध्य किए गए समझौते के तहत LEO(Low Earth Orbital) में 72 उपग्रह लांच करने के लक्षित है। जिसका पहला जत्था 2022 में प्रक्षेपण हेतु GSLV MK3 रॉकेट द्वारा 36 उपग्रहों को प्रक्षेपित किया गया था।
- LVM3 इसरो का सबसे भारी प्रक्षेपण यान है। जिसके द्वारा **LVM3-M3/One web India 2** मिशन सम्पन्न हुआ।
- इस मिशन के तहत वनवेब कंपनी का 36 उपग्रहों को LVM 3 के द्वारा प्रक्षेपित किया गया था। 36 उपग्रहों को 4 उपग्रहों के 9 बैचों में प्रक्षेपित किया गया। उपग्रहों का कुल वजन 5805 किलोग्राम था।
- उपग्रहों को 450 किमी की कक्षा में रखा गया है। जिसके लिए प्रक्षेपण वेग अधिक रखा गया है।

वनवेब इंडिया सैटेलाइट

LVM3 प्रक्षेपण यान

- LVM3 लॉन्च वाहन को पूरी तरह से स्वदेशी तकनीक के साथ बनाया गया था।
- चंद्रयान -2 मिशन सहित 5 मिशन इसके द्वारा प्रक्षेपित किए जा चुके हैं।
- गगनयान कार्यक्रम के लिए मानव रेटिंग के एक भाग के रूप में वाहन को कई महत्वपूर्ण परीक्षणों से गुजरना पड़ा।

- क्रायोजेनिक चरण को विशिष्ट रूप से ओर्थोगोनल दिशा में ओरिएंट और री-ओरिएंट करने के लिए डिज़ाइन किया गया था ताकि उपग्रहों को सटीक रूप से इंजेक्ट करने की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।
- उपयोगकर्ता की समय-सीमा को पूरा करने के लिए वाहन को मांग-संचालित आधार पर बहुत कम समय में प्राप्त किया गया था।

मिशन का प्रक्षेपण – यान का प्रक्षेपण तीन चरणों के तहत किया जाता है।

1. टू स्टेज प्रणोदक
2. एल 110 लिक्विड स्टेज
3. C 25 क्रायोजेनिक स्टेज

वनवेब-

- वनवेब, यूनाइटेड किंगडम की एक कंपनी है।
- यह वनवेब का 18वां लांच था। इसका लक्ष्य 618 उपग्रहों को लो अर्थ ऑर्बिट में लांच करना है।
- इसका उद्देश्य वैश्विक कवरेज स्थापित करना है। जिसके द्वारा अंतरिक्ष से संचालित एक वैश्विक संचार नेटवर्क स्थापित किया जा सके।
- भारत में भारतीय इंटरप्राइजेज NSIL, वनवेब का एक प्रमुख निवेशक व शेयरधारक है।

LVM3-M3/One web India 2 मिशन के लाभ

- एक वैश्विक **संचार नेटवर्क** है यह कनेक्टविटी को सुगम बनाने के लिए तैयार किया गया है। यह उद्योगों के साथ साथ गांवों, कस्बों, नगरपालिकाओं, स्कूलों जैसे दूरस्थ क्षेत्रों को जोड़ने के लिए एक सफल समाधान प्रस्तुत करेगा।
- **अविलंब संचार-** सूचना प्रसारण में होने वाले विलंब दूर करेगा।
- यह एक **वाणिज्यिक मिशन** है जिसके द्वारा भारत को 1000 करोड़ रुपये का लाभ प्राप्त हुआ है।

उपग्रह संचार के अन्य अनुप्रयोग – वाणिज्यिक संचार समूह सी बैंड, विस्तारित सी बैंड, केयी बैंड और एस बैंड आदि के प्रेषानुकरक के साथ कार्य करता है। ये प्रेषानुकरक, टेलीविजन, रेडियो, नेटवर्किंग जैसी सेवाओं का प्रयोग करते हैं। इसके साथ ही इसरो दूरचिकित्सा, दूरशिक्षा व आपदा प्रबंधन में सहायता करता है। यह संचार उपग्रह देश के विकास के लिए हमेशा उन्मुख रहते हैं।

वैश्विक स्तर पर अंतरिक्ष विज्ञान में भारत की स्थिति

- भारत दुनियाँ के प्रमुख अंतरिक्ष देशों में से एक है। किंतु अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की हिस्सेदारी केवल 2% है।

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com

- किंतु अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों ने भारत की विश्वपटल पर अपनी पहचान बनाई है जिस कारण कई देश भारत के प्रक्षेपण यान को अपने उपग्रहों को प्रक्षेपित करने के लिए वरीयता देते हैं। इसी के तहत यूनाइटेड किंगडम ने अपने उपग्रहों को प्रक्षेपित करने के लिए इसरो(भारत) को चुना।
- अब तक इसरो के द्वारा विदेशी 422 विदेशी उपग्रह लांच किए जा चुके हैं।
- इसके साथ ही इसरो द्वारा अब तक 126 अंतरिक्ष यान मिशन, 89 लांच मिशन, 13 छात्र उपग्रह, 2 पुनः प्रवेश उपग्रह लांच किए जा चुके हैं।
- इसरो द्वारा भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली या इनसैट को प्रमुखता दी जाती है। यह बहुद्देश्यीय उपग्रहों की एक श्रृंखला है।

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान के विकास हेतु कदम-

- **रक्षा अंतरिक्ष एजेंसी-** हाल ही में भारत के रक्षा क्षेत्र को मजबूत करने के लिए रक्षा अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की स्थापना की गई है। जिसे प्रतिद्वंदियों का सामना करने के लिए आयुध निर्माण का कार्य सौंपा गया है।
- इसके साथ ही गुजरात के गांधी नगर में डिफेंस एक्सपो 2022 आयोजित किया गया।
- **उपग्रह विनिर्माण** के लिए भारत का बजट 2025 तक 3.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर पहुँचने की उम्मीद की जा रही है।
- निजी कंपनियों को भी अंतरिक्ष अवसंरचना में अवसर देने हेतु **भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र** की स्थापना की गई है।
- स्कूली छात्रों में इसरो व अंतरिक्ष से संबधित जागरुकता लाने के लिए संवाद कार्यक्रम को प्रारंभ किया गया है।

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com

स्रोत

https://www.isro.gov.in/LVM3M3_OneWeb_LiveStreaming.html
Indian Express
https://www.isro.gov.in/Mission.html

Gunjan Joshi

नवरोज उत्सव

संदर्भ- हाल ही में विश्व की ईरानी आबादी द्वारा नवरोज उत्सव बहुत धूमधाम से मनाया गया। भारत के पारसी समुदाय द्वारा 21 मार्च से यह उत्सव मनाया जा रहा है।

नवरोज-

- नवरोज या नौरोज उत्सव, ईरानी नववर्ष है जो ईरानी सौर कैलेंडर के पहले महीने फॉरवर्डिन के पहली तारीख को मनाया जाता है।(ईरानी सौर कैलेंडर में 360 दिन होते हैं। शेष 5 दिनों को एक गाथा के रूप में मनाया जाता है जिसमें पूर्वजों को याद किया जाता है।)
- उत्सव के दौरान भोजन को महत्वपूर्ण माना जाता है, भोजन व उपहारों को एक मेज में रखा जाता है तथा इसके चारों ओर परिवार के सदस्य एकत्रित हो जाते हैं। और उस समय की प्रतिक्षा करते हैं जब **सूर्य भूमध्य रेखा को पार कर जाता है,** ठीक उसी क्षण नवरोज यानि नववर्ष प्रारंभ हो जाता है। उत्सव 12 दिन तक मनाया जाता है।
- ईरान में इस भोजन की मेज को **हफ्तसीन (सात एस)** कहा जाता है। हफ्तसीन में सात एस से प्रारंभ होने वाले व्यंजन रखे जाते हैं- सोमक(सरसफल), शराब, शीर(दूध), सीर(लहसुन), सिरहक(सिरका), सेब, शिरनी(शक्कर से बनी टॉफी)।

Yojna IAS है तो सफलता है
yojnaias.com

नवरोज की उत्पत्ति

- ईरान में नवरोज उत्सव लगभग 3000 वर्ष पूर्व मनाया जा रहा है।
- इसकी उत्पत्ति ईरानी परंपराओं से हुई किंतु पश्चिमी एशिया, मध्य एशिया, काकेशस, काला सागर बेसिन, बाल्कन व दक्षिण एशिया में यह त्योहार मनाया जाता है।
- नवरोज बसंत की शुरुआत के लिए **बसंत विसुव** के रूप में मनाया जाता है। विषुव एक ऐसी परिस्थिति है जहाँ दिन व रात दोनों बराबर होते हैं।
- पारसी ग्रंथों के अनुसार **राजा जमशेद** ने शीतकालीन मारक ठंड से मानव जाति की रक्षा की थी। जमशेद को कथानकों में आदिमानव से पशुपालक जीवन की शुरुआत करने वाला भी माना जाता है।

- जमशेद से जुड़ी एक कथा यह भी है कि उसने स्वयं के लिए एक रत्नजड़ित सिंहासन का निर्माण करवाया, तथा उसमें सूर्य की तरह विराजमान हो गया। सिंहासन को देवदूतों ने उठाया, उस दिन को नया दिन अथवा नवरोज कहा।
- **कुर्दों के लिए नवरोज**, प्रतिरोध का प्रतीक(कुर्दों के लिए तुर्की में कई प्रतिबंध थे) है। कुर्दीश इसे राष्ट्रीय पहचान के रूप में मनाते हैं। किवदंतियों के अनुसार कावा, लोहार ने अत्याचारी जुहाक की हत्या कर दी थी इसी दिन को वे नवरोज के रूप में मनाते हैं। इसके बाद सात कुर्द जनजातियों ने मध्य साम्राज्य(तुर्की, ईरान, इराक, सीरिया) का निर्माण करने के लिए डिऑक्स को नियुक्त किया, जो अपने उत्तरदायित्व में सफल रहा। कुर्द इस त्योहार के दिन स्वतंत्रता व शांति की मांग करते हैं। (आधुनिक इतिहास में कोई कुर्द देश नहीं है।)

नवरोज की अंतर्राष्ट्रीय पहचान

- संयुक्त राष्ट्र महासभा में 2010 में अंतर्राष्ट्रीय नवरोज दिवस की घोषणा की।
- यूनेस्को ने 2016 में इसे मानवता की अमूर्त विरासत के रूप में सूचीबद्ध किया है।

भारत में नवरोज उत्सव

- भारत में भी पारसी समुदाय द्वारा यह त्योहार मनाया जाता है।
- भारत में पारसी समुदाय की जनसंख्या लगभग 60 हजार है जिसमें से 40 हजार लोग इस त्योहार में प्रतिभाग करते हैं।
- पारसी समुदाय के अतिरिक्त भारत में बहाई समुदाय व कश्मीरी समुदाय द्वारा भी नवरोज मनाया जाता है।
- भारत में, लोग पारसी समुदाय के पूजा स्थल अग्नि मंदिर, पर जाते हैं, अपने घरों को सजाते हैं, व्यंजन तैयार करते हैं, और दिन के दौरान सूर्य की गति के आधार पर अनुष्ठान करते हैं।
- भारत में यह उत्सव सामुदायिक एकता का प्रतीक है।

भारत में पारसी समुदाय का इतिहास

- ईरान में धार्मिक उत्पीड़न के बाद पारसी लगभग 936 ई. में भारत पहुँचे।
- 17वी शताब्दी के ग्रंथ **किस्सा-ए- संजन** के अनुसार गुजरात के हिंदू राजा जादव राणा के दरबार में ईरानियों ने शरण ली थी। ईरान के पारस प्रांत के नाम पर ये भारत में पारसी कहलाए।
- पारसियों ने पवित्र अग्नि को बचाने के लिए गुजरात के उदवाड़ा में एक अग्नि मंदिर की स्थापना की थी।
- अंग्रेजों के आगमन के समय पारसी, सूरत में रहते थे। सूरत में अंग्रेजों ने अपना पहला कारखाना स्थापित किया। अंग्रेजों के भारत में प्रभुत्व जमाने से पूर्व ही पारसियों ने अपनी महत्ता दोनों पक्षों में साबित की और वे अंग्रेजी भाषा सीखकर अनुवादक का कार्य करने लगे।

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com

- भारतीयों में समुद्र पार जाकर धर्म से बहिस्कृत होने की किवदंती थी, पारसियों में इस प्रकार की कोई प्रथा नहीं थी उन्होंने इस अवसर का लाभ उठाते हुए चीन से व्यापार करना प्रारंभ किया।
- 19वी शताब्दी के भारत के प्रमुख व्यापारियों में **जमशेदजी जीजीभाई** अग्रणी थे। वे महारानी विक्टोरिया के काल में **बैरोनेट**(उपसामन्त) का खिताब पाने वाले पहले व्यक्ति थे।
- भारतीय नवजागरण के दौर में **दादाभाई नौरोजी** ने भारत में शिक्षा का प्रचार प्रसार करने के साथ समाज सुधारक के रूप में अपनी अमिट छाप छोड़ी।
- इनके अतिरिक्त होमी जहाँगीर भाभा, फील्ड मार्शल सैम मानिकशाह, रतन नवल टाटा, डॉ साइरस पूनावाला आदि भारत के प्रसिद्ध पारसी समुदाय के व्यक्तित्व हैं।
- भारत में पारसी समुदाय की जनसंख्या वृद्धि के लिए **जियो पारसी योजना** प्रारंभ की।

स्रोत

Indian express
Lala, R.M. : Bharat se Pyar(2006)
indianculture.gov.in

Gunjan Joshi

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com